द्वितीय अध्याय

" 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के पात्र एवं उनके चरित्र - चित्रण का अध्ययन "

द्वितीय अध्याय

विवेच्य उपन्यास के पात्र एवं उनके चरित्र - चित्रण का अध्ययन

उपन्यास के तत्त्वों में चरित्र - चित्रण का सर्वाधिक महत्त्व है। यदि कथानक उपन्यास का मेरूदण्ड है, तो चरित्र - चित्रण उसका प्राण माना जाता हैं। उपन्यास की कथावस्तु में सुख - दुख को भोगनेवाले या संघर्ष में भाग लेनेवाले कुछ पात्र होते हैं, उनका चित्रण उपन्यासकार अत्यंत यथार्थता के साथ करता हैं। पात्रों के क्रिया - कलाप और वार्तालाप से कथावस्तू का धागा बुना जाता है, जिससे पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश पडता है। पात्र जितने ही वास्तविक और जीवन्त होंगे, उतनी ही कथावस्तु आकर्षक बनती है, इसलिए घटनाप्रधान उपन्यासों की अपेक्षा चरित्रप्रधान उपन्यास महत्त्वपूर्ण होते हैं। उपन्यास को हेनरी जेम्स ने 'जीवन का दर्पण', बालजाक ने 'मनुष्यों की यथार्थताओं से बना घर' और प्रेमचन्दजीने'मानव चरित्र का चित्र माना है।'

इस सम्बन्ध में डॉ. त्रिभुवन सिंह का कथन है, '' उपन्यासकार के लिए किसी भी चरित्र का निर्माण करना तब तक संभव नहीं है, जब तक कि वह अपनी कल्पना के सम्मुख किसी जीवित व्यक्ति को लाकर खडा नहीं कर लेता। बिना किसी एक निश्चित व्यक्ति को मस्तिष्क में लाये, यह कभी भी सम्भव नहीं है कि चरित्रों में जीवन प्रेरणादायिनी शक्ति का संचार किया जा सके।'' [1]

हिन्दी साहित्य कोश में पात्र और चरित्रचित्रण के संबंध में लिखा है ''उपन्यास में कथावस्तु के संगठन और विन्यास से भी अधिक महत्त्वपूर्ण चरित्र - चित्रण की कुशलता है। उपन्यासों के पात्रों के क्रियाकलापों से ही कथावस्तु का निर्माण होता है, अतः पात्र जितने ही अधिक सजीव और यथार्थ होंगे कथानक में उतना ही आकर्षण पैदा होता है। पात्रों को सजीव और यथार्थ बनाने के लिए उपन्यासकार की कल्पना - शक्ति मानव मन की सूक्ष्म अध्ययन और उसकी कल्पनात्मक योजना की परीक्षा होती है।'' [2]

उपन्यासकार चरित्र - चित्रण करते समय यह देखता है कि उसके पात्र इसी समाज के जिवंत, गुण - दोषयुक्त एवं प्रेरक चरित्र हैं, तथा पात्रों के चरित्र में कौनसी विशेषताएँ है, जिनके आधार पर उसकी मानवता को देख एवं परखा जा सकता है।

हिन्दी के साठोत्तरी उपन्यासों में चरित्र की उन्नत स्थिति बहुत समय तक नहीं टिकी। बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासो में पात्रों का बाहुल्य बढता गया जिससे पात्रों की स्वतंत्र सत्ता की हानि हुअी। उपन्यास के पात्रों पर माकर्सवादी विचारों का प्राबल्य बढता गया। डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकरजी के मतानुसार - '' बढती औद्योगिकता अभूतपूर्व तकनिकी विकास, मानव के नियंत्रण के परे अजस्त्र वैज्ञानिक शक्ति का विकास, विश्वयुध्द आदि के संदर्भ में मनुष्य बाह्य जीवन के प्रचंड प्रवाह के भँवर में फालतू रूप में प्रस्तुत होने लगा, व्यक्ति के पैरोंतले की भूमि खिसकने लगी, व्यक्तित्त्व जैसी कोई चीज नहीं रह गयी।'' [3] परिणाम स्वरूप उपन्यासों में पात्रों का बाहुल्य बढता गया और उनका चरित्र - चित्रण आधुनिकता से ओत - प्रोत रहने लगा।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के पात्र एवं उनके चरित्र - चित्रण का विवेचन लेखक ने यहाँ कैसे प्रस्तुत किया है, इसे देखेंगे -

2.1 पुरूष पात्र

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र - चित्रण इस प्रकार है –

अली अहमद

अली अहमद प्रस्तुत उपन्यास का निम्नवर्गीय जीवन का प्रतिनिधी पात्र है, जो उपन्यास की शुरवात से उच्चवर्गीय समाज से शोषित एवं पीड़ित है, और उपन्यास के अंत तक संघर्षरत है। उपन्यास की कथा अली अहमद के परिवार के निकट ही घुमती है। अली अहमद की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

अर्थाभाव से ग्रस्त :-

अली अहमद एक गरीब मुसलमान चुडिहार है, उसकी बीवी चुड़िया पहनाने का काम करती है, लेकिन लडका पैदा होने के कारण वह काम करने नहीं जाती, इसलिए अली अहमद पाण्डेजी के यहाँ कर्जा लेने जाता है। नैनी के बाजार में भी खाने - पीने की अनेक चीज़ें देखकर भी वह किसी भी होटल में नहीं जाता क्योंकि ''खाने के बाद पता नहीं कितना पैसा माँग लें ? मुँह में पानी तो आया, मगर मन मारकर वह आगे बढ़ गया।'' [4] दुल्लोपुर में भी अली गाँव छोडकर नौरोजाबाद काम की तलाश में जाता है। घर की खराब स्थिति के कारण वह दुकान चलाता है, धार्मिक कार्य करता है, जंगल की जमीन पर खेत बनाता है, कई तरह के काम करता है क्योंकि वह अर्थाभाव से ग्रस्त हैं।

अत्याचार से पीड़ित :-

अली अहमद अत्याचार से पीड़ित हैं, घर में रनिया की तबियत खराब होने के कारण वह लता की शादी में इक लेने नहीं जा सकता लेकिन पाण्डे बाबा उसकी बात सुने बिना ही अली को पीटते हैं, वह सोचता है कि '' साईत की बात है और क्या।'' [5] बुध्दू और भूरी के भाग जाने पर भी गाँव के सभी लोग इकठ्ठे होकर अली अहमद को बुरी तरह पीटते हैं। इन घटनाओं से अली की अत्याचारग्रस्तता का परिचय प्राप्त होता हैं।

आशावादी :-

अली अहमद आशावादी प्रवृत्ति का पात्र है, पाण्डेजीद्वारा अन्याय अत्याचार होने पर वह उनकी शिकायत के लिए देश के प्रधानमंत्री नेहरूजी के पास

इलाहाबाद चला जाता है, उसे लगता है कि नेहरूजी उसकी जरूर मदद करेंगे उसके इस कथन से उसकी पुष्टी हो जाती हैं - "मगर सुना है कि जवाहरलालजी पहले के राजा लोगों की तरह नहीं है। वे परधानमंत्री हैं। उनका काम है देस की देखभाल करना और इसके वास्ते उन्हें तन्ख्वाह भी मिलती है।" [6] उसकी आशावादिता में भोलापन भी दिखाई देता है।

सरल स्वभाव का संवेदनशील व्यक्ति :-

अली अहमद का स्वभाव सरल है, किसी को भी दुःख नहीं देना चाहता है। अली अपने जीवन में अनेक दुःख - दर्द सहन करता हैं, फिर भी गरीब, असहाय, पीड़ित लोगों के प्रति उसका मन तड़प उठता है। उसका एक उदाहरण देखिए - मुडकी के बिट्टन खाला की लडकी राबिया के बीमार होने पर तुरन्त अस्पताल ले जाने की व्यवस्था करता है। नूरू की लडकी की शादी टूटने से अली को गहरा दुःख पहुँचता है। यही नहीं रामवृक्ष पाण्डे के इतने अत्याचार के बावजूद भी उसकी मृत्यु की खबर से अली निराश होकर कहता है - " जिसने हमारी बेइज्जती की वह तो अब रहा नहीं और जो रहा नहीं, उससे क्या दुस्मनी ?" [7] इस कथन से अली की सहानुभूतीवादी दृष्टी उभर आती है।

आंतरिक संघर्ष :-

अली अहमद आंतरिक संघर्ष का शिकार है, एक तरफ वह अपने पर हुए अत्याचार से पिड़ित है, तो दूसरी तरफ अपने परिवार की स्थिति को लेकर वह हमेशा चिंतित रहता है। वह अपने बेटे बुध्दू को पढ़ा लिखाकर अफ़सर बनाना चाहता है, लेकिन उच्च वर्ग के शोषण के कारण उसके सपने, सपने ही रहते हैं। इससे निराश होकर वह कहता है - " क्यों, क्या गरीब आदमी को ख्वाब देखने का कोई हक नहीं है ? " [8] इससे उसके मन की अवस्था का विवरण स्पष्ट हो जाता है।

धर्म के प्रति ईमानदार :-

अली धार्मिक प्रवृत्ति का इन्सान हैं। धर्म के प्रति उसके मन में आस्था हैं। दुल्लोपुर में वह कई प्रकार के धार्मिक कार्य करता है। तथा अन्य मुसलमान लोगों के साथ मिल जुलकर रहने की बात करता है। अली जलील तथा खलील को मीलाद पढ़ने तथा सुनने के प्रस्ताव के बारे में शाब्बासी देता हैं। बुध्दू तथा भूरी भागकर शादी करके घर लौटते है, तब वह अपने बेटे को आते ही पहला सवाल पूछता है कि " बहू ने कलमा पढ़ लिया हैं ? " [9] वह गांधीवादी तरीके से समाज के सामने पेश होकर अनेक दुःखों - दर्दो को भोगता है।

देशप्रेम :-

अली अहमद को अपने देश से प्यार हैं। भारत - चीन संघर्ष, जबलपुर का दंगा आदि प्रसंगों से वह चिंतित रहता हैं। हिंदूस्तान की पाकिस्तान पर जीत की खबर सुनकर उसे आनंद होता है। अन्याय, अत्याचार का शिकार होने पर भी अपना मुल्क न छोडने की भावना उसके देशप्रेम का प्रमाण है। वह माटी से इमान रखनेवाला भारतीय मुसलमान हैं।

इसके अलावा स्वाभिमान, व्यवहार कुशलता, मानसिक दवंदव, महत्त्वाकांक्षी , दृढनिश्चयी परिवारप्रेमी आदि चारित्रिक विशेषताएँ अली के चरित्र में पनपती हुई दिखाई देती हैं। अली प्राकृतिक समस्याओं से भी लडते - झगडते अपने गंतव्य तफ पहुँचने का प्रयत्न करता हैं।

पं. रामवृक्ष पाण्डे

पं. रामवृक्ष पाण्डे बलापुर गाँव का जमींदार है, वह ब्राह्मण है तथा समाज की छोटी जातियाँ - चाहे वे हिंदू हो या मुसलमान उन पर राज चलाता है। रामवृक्ष पाण्डे का गाँव में शासन था 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में वर्णित उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

अन्यायी अत्याचारी शासक :-

पं. रामवृक्ष पाण्डे अत्याचारी व्यक्ति है वह जमींदार है और गाँव के गरीब तथा असहाय लोगों पर अन्याय - अत्याचार करते हैं। पाण्डेजी गाँव की छोटी जातियों के लोंगो पर रोब जमाते हैं। घर का हर छोटा - मोटा काम उनसे करवाते है। पाण्डेजी के किसी भी निर्णय अथवा विचारों का विरोध करना उन्हें बिलकुल पसन्द नहीं है। अली अहमद को बिना किसी कारण के मारते है।

पूंजीवादी शोषक :-

स्वार्थलोलूपता पाण्डेजी का महत्त्वपूर्ण स्वभाव गुण हैं, उन्होंने बलापुर में ठाठ से जमींदारी चलाकर तथा गरीबों का शोषण करके तीन पीढ़ियों का धन कमाया हैं। पाण्डेजी "जमीनदारी में जो लगान की वसुली होती थी, उसका एक हिस्सा ललमुँहे बंदरों के उदर चला जाता था। " [10] इस बात से नाराज है। वह सबकुछ लाभ खुद ही पाना चाहते हैं।

जातीयवादी :-

रामवृक्ष पाण्डेजी ब्राह्मण होने के कारण उन्हें अपनी जाति और धर्म का अभिमान था वे गाँव के छोटे - छोटे लोगों का हमेशा अपमान करते हैं। समाज के नीचले वर्गों की जातियों की घृणा करते हुए कहते है" कुछ न बोलो तो चमार -

सियार की जात एकदम सिर पर ही चढ़ जाती है। '' [11] इस कथन से पीछडे वर्गों का दवेष उनके मनसे स्पष्ट झलकता है।

पटेलवादी :-

पं. रामवृक्ष पाण्डेजी सरदार पटेल के जहाल मतों के अनुयायी तथा समर्थक हैं। उन्हें म. गांधी - नेहरूजी के विचारों में तथा कार्यो में आस्था नहीं है। स्वदेशी शासन की बागडोर सरदार पटेल के हाथों में होनी चाहिए थी, ऐसा उनका मानना है।

धर्मांधता :-

पं. रामवृक्ष पाण्डेजी मानते है कि - '' भारतवर्ष भिन्न-भिन्न जातियों का देश भले है, पर मूलतः यह हिंदू देश है, इसलिए सभी धर्मावलंबियों को समान नहीं माना जा सकता। नेहरू के संविधान में तो सबकी हिस्सेदारी बराबर-बराबर है।'' [12] इस कथन से उनकी धर्मांधता का परिचय प्राप्त होता है।

प्रतिशोध की भावना :-

अली अहमद पाण्डेजी की बेटी लता की शादी में हक लेने अनुपस्थित रहता है, इससे पाण्डेजी को अपना अपमान लगता है। गाँव के प्रतिष्ठित ब्राह्मण के हुक्म का पालन न होते देखकर वे क्रोधित होते है और '' इस अल्ली चुड़िहार को मैंने दर - दर का भिकारी न बना दिया तो मेरा नाम रामवृक्ष पाण्डे नही रमुआ चमार होगा।'' [13] ऐसा प्रण करते हैं, इसमें उनके अंदर की बदले की भावना पूर्णतः दृष्टिगोचर होती है।

सृष्टिनारायण पाण्डे

सृष्टिनारायण पाण्डे रामवृक्ष पाण्डेजी के छोटे भाई हैं, वे भी अपने भाई के ही तरह अत्याचारी हैं, रामवृक्ष पाण्डेजी की मृत्यु के बाद वह जमींदारी चलाते हैं, और गरीब जनता पर अन्याय करने का एक भी मौका नहीं छोडते। जिंदगीभर कुवाँरे रहते हैं, और एक दिन अपने गुनाहों की सजा उन्हें अपनी हत्या के रूप में प्राप्त होती है। सृष्टिनारायण पाण्डेजी की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नांकित हैं -

संस्कृत के ज्ञानी पंडित :-

सृष्टिनारायण पाण्डे संस्कृत के प्रकांड पंडित हैं। वेद और शास्त्रार्थ का उन्होंने गहरा अध्ययन किया है। श्लोक तथा व्याकरण के नियम उन्हें हमेशा याद रहते हैं, तथा उनका विवरण देने में तथा विद्वानों का मुकाबला करने में हमेशा तत्पर रहते हैं। पं. शिवपूजन तिवारी को उन्होंने शास्त्रार्थ में पछाड दिया है, जिससे गाँव में उनकी पहचान संस्कृत के ज्ञानी विद्वान के रूप में हो चुकी है।

कठोर धार्मिक एवं जातीयवादी :-

पं. सृष्टिनारायण पाण्डे अपने भाई की तरह ही धार्मिक एवं जातीयवादी है। आजादी के बाद भारतीय संविधान ने समाज के पिछडे वर्गों को जो हक एवं अधिकार दिए हैं, उसका वे विरोध करते हैं। सत्तार दिल्ली से निकलनेवाले 'क्रांति' का एक अंक देकर उसमें छपे वेद और कुरआन की समानता की बात कहता है, तो पंडितजी उसको नकारकर हिंदू धर्म तथा संस्कृत के वेदों की कोई भी बराबरी नहीं कर सकता यह स्पष्ट कर देते हैं। इन प्रसंगों से उनकी कठोर धार्मिकता के दर्शन होते हैं।

अहंपूर्ण एवं आत्मकेंद्रित :-

पं. सृष्टिनारायण पाण्डे को अपने जमींदारी तथा ज्ञान का व्यर्थ अभिमान तथा अहं है। अली अहमद दुल्लोपुर से लौटने के बाद उन्हें 'सलाम पंडितजी' कहके अभिवादन करते हैं, तो वह तिलमिला जाते हैं '' क्योंकि 'पाँयलागी' के अतिरिक्त और किसी 'अभिवादन' के वे आदी नहीं थे।'' [14] आँख उठाकर वह फुल्ली दाई को भी देखकर सृष्टीनारायणजी ऐसा ही व्यवहार करते हैं। अली अहमद को देखते हैं, और उसकी ओर पिच्च से थूंकते हैं। जिससे उनके मन की घृणा तथा अहंभाव का दर्शन होता है।

दुराचारी एवं दृष्ट :-

पं. सृष्टिनारायण पाण्डे लोगों पर अन्याय अत्याचार करते हैं तथा असहाय तथा बेसहारा लोगों के साथ उनका व्यवहार अत्यंत बुरा होता है। मुन्ना नचनिया का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं, उसके नाच - नौटंकी से पैसे भी कमाते हैं लेकिन उसकी जरूरत खत्म होते ही उसको दूर धकेलते हैं, इस पर मुन्ना इसका कारण पूछता है तो पण्डेजी कहते हैं '' तो ? तो का तूँ समझत हो कि हम तोहार गोड़ चाहेंगे।'' [15] और उसे बूरी तरह पीटते हैं। गाँव के गरीब लोगों का शोषण करते हैं। बलापुर में उनका राज चलता हैं, इसलिए वह गाँव की जनता में अपनी धाक जमाना चाहते हैं।

परंपरावादी :-

पं. सृष्टिनारायण पाण्डे परंपरावादी है, आधुनिकता को वह आसानी से मानने के लिए तैयार नहीं हैं। आजकल के लडके जो पढ़ते हैं उसका वे विरोध करते हैं, तथा संस्कृत पढ़ने की सलाह देते हैं। इलाके के जवान लडकों की रूचि को देखकर वह नाराज होते हैं, तथा गिरती नैतिकता के बारे में विचार प्रकट करते हुऐ कहते है - '' फिल्मी गाने सुने जा रहे है, स्टोरियाँ सुनी जा रही है। वास्तविक

ज्ञान की वार्ता में किसी को रूचि ही नहीं है। राम ! राम ! अब कितना नैतिक पतन होगा हमारे हिंदू समाज का ? " [16]

कामुक और अत्याचारी :-

पं. सृष्टिनारायण पाण्डे अत्याचारी एवं कामुक प्रवृत्ति के आदमी हैं। वह फुल्ली दाई की नातिन की इज्जत पर हात डालते हैं, तो वह चीख उठती है कि " दाई - दाई, ऊ दहिजरा हमरे उप्पर गिरि के हमका दबाए देत रहा .....।" [17] इसके साथ - साथ उन्होंने मुन्ना नचनिया को रखैल बना के रखा था। गाँव के तोते पासी की लडकियाँ भूरी तथा जमुना को भी वह बूरी नजर से देखता हैं। इन सारी घटना एवं प्रसंगों से उनके अंदर छिपे कामुक व्यक्ति के दर्शन होत है।

बुध्दू उर्फ डॉ. रफी अहमद

बुध्दू अली अहमद का बेटा है, उपन्यास में बुध्दू के जन्म से लेकर उसके युवावस्था तक की घटनाओं का वर्णन हैं - इसलिए उसके जीवन के कई पहलू सामने आते हैं वे इस प्रकार हैं -

आशावादी बालक :-

दुल्लोपुर में अल्ली अहमद और रनिया के द्वारा खेत बनाने के लिए जमीन तैयार करते समय बुध्दू अपनी अम्माँ के हात थकने पर काम पर जूट जाता है। उसके मन में खेत के बारे में अनेक विचार आते है। काम खत्म करके घर लौटते समय एक अजीब तरह का आनंद उसके दिल में भरता है। बुध्दू दिनभर उसका ही विचार करता है तथा रात में बुध्दू अपने बाप से कहता है " अब्बा, अपने खेत में हम धान बोएँगे, है न ? अब तो हम भी खुब चावल खाएँगे है न अब्बा। " [18] इस कथन से उसके अंदर का आशावाद पनपता है। बचपन से मेहनत के साथ वह आशावादी है।

जिज्ञासुवृत्ति :-

जबलपुर में उभरे सांप्रदायिक फसाद के दौरान हिंदू और मुसलमानों ने पंडित नेहरूजी के भाषण के बाद लडाई - झगडा बंद कर दिया। इस बात को बुध्दू के गुरूजी - द्वारा स्कूल में बताने पर बुध्दू के मन में जिज्ञासा पैदा होती है। वह नेहरूजी का भाषण सुनने के लिए सारे छात्रों के साथ डिंडौरी जाना चाहता है। बुध्दू के मन में नेहरूजी को देखने की जिज्ञासा निर्माण होती है। अपने पिताजी की परवानगी निकालकर वह नेहरूजी के भाषण सुनने तथा उन्हें देखने के लिए डिंडौरी जाना चाहता हैं। वह अपने अब्बा से कहता हैं - " मैं भी जाऊँगा । " [19] इससे बुध्दू के मन की अवस्था का चित्रण स्पष्ट होता हैं।

शोषण से ग्रस्त :-

बलापुर के स्कूल में पढ़ाई के दौरान वहाँ के उच्चवर्गीय छात्र बुध्दू को 'शाखा' में आने नहीं देते तथा मियाँ - मियाँ, मुसल्ला, कटुवा कहके चिढ़ाते है। बहुत बुरी - बुरी गालियाँ बकते हैं। इस कारण बुध्दू दुःखी होता है और स्कूल में न जाने का फैसला करता है। मुन्ना नचनीया सृष्टिनारायण पाण्डे की हत्या करता है, लेकिन अशोककुमार पाण्डे बुध्दू के खिलाफ रिर्पोट दर्ज करता है, जिस कारण उसे गिरफ्तार किया जाता है। इन घटनाओं से बुध्दू का अपने गाँव में होनेवाले शोषण पर प्रकाश पडता है।

शंकाकुल तथा पलायनवादी :-

बुध्दू शंकाकूल तथा पलायनवादी युवक लगता है भूरी को लेकर भाग जाने में वह थोडा भयग्रस्त हो जाता है और शंकाकूल होकर भूरी को पूछता है - '' हम तो सोच रहे थे, कि सायद तुम धोखा दे दो, न आओ।'' [20] इस कथन से उसके शंकित होने के प्रमाण प्राप्त होते हैं तथा जमाने से डरकर वह भूरी से भाग जाकर शादी करता है, जिससे उसके अंदर के पलायनवादी इन्सान का चित्र सामने आता हैं।

स्वाभिमानी :-

बुध्दू स्वाभिमानी युवक है भूरी को भगाकर ले जाने के बाद वह मध्यप्रदेश में पल्लेदारी का काम करके अपना और भूरी का पेट भरता है। हराम की कमाई वह नहीं खाता, या किसी की मदद की याचना नहीं करता। घर लौटते समय इसी कमाई से अब्बा, अम्माँ तथा ताहिरा के लिए कपडे खरीदकर लाता है, जिससे उसके ईमानदार तथा स्वाभिमानी होने के प्रमाण दृष्टिगोचर होते हैं।

परिवर्तनवादी :-

बुध्दू उर्फ डा. रफी अहमद परिवर्तन में विश्वास रखता है। समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, शोषण, महँगाई को खत्म करने के लिए पूंजीवादी लोगों पर व्यंग्य करता है। मजदूरों और किसानों का संगठन बनाकर सशस्त्र क्रांति का झेंडा फैरानेवाले बवाली का साथ देने का निर्णय करता है, तथा अशोककुमार के कहने पर भी वह झूठा प्रमाणपत्र न देकर भ्रष्टाचार तथा बेईमानी का विरोध करता है।

आधुनिकता का पक्षघर :-

बुध्दू जबसे डाक्टर बनता है तबसे घर की स्थिति थोडी सुधर जाती है। बुध्दू अपनी अम्माँ को अपना परंपरागत खानदानी पेशा छोडने की सलाह देते हुए कहता है '' चुड़िहारों के बच्चे भी चुड़िहार बनकर ही जिंदगी काटे ? मगर अब ई

सब नहीं होगा । समझी ? ताहिरा गँवई नहीं जाएगी।'' [21] साथ ही ताहिरा की पढ़ाई रोकने की अम्माँ की इच्छा की वह आलोचना करता हैं, जिस कारण उसके आधुनिक विचार तथा व्यवहार उजागर होते है। वह आधुनिक परिवर्तनों का पक्षधर बनकर विकासोन्मुख जीवन जीना चाहता हैं।

पं. अशोककुमार पाण्डे

पं. अशोककुमार पाण्डे, दयाशंकर पाण्डे के पुत्र तथा रामवृक्ष पाण्डे के पोते हैं, वे पाण्डे परिवार की तीसरी पीढ़ी का नेतृत्व कर रहे हैं। अपने दादा की तरह ही वे जमींदारी का ठाठ चलाते हैं तथा गरीबों का शोषण करने की अपने परिवार की परंपरा को निभाते हैं। उनकी स्वभावगत विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

जातीयवादी :-

पं. अशोककुमार पाण्डे अन्य धर्मों और जातियों की हमेशा निर्भत्सना करते रहते है। मुसलमान लोगों के तरफ वे हमेशा बूरी नजर से देखते हैं और अपने धर्म का अभिमान व्यक्त करके उनका अपमान करते हैं। मुस्लिमों के प्रति उनके इस व्यवहार के कारण उनके अंदर छिपी हुई जातीयता स्पष्टतः उजागर होती है। मुसलमान लोगों के बारे में उनका कथन है - '' इन लोगों के सारे काम उल्टे होते हैं। हम लोग सीधे ढंग से हात धोते हैं, ये लोग उल्टे ढंग से। हम लोगों के यहाँ सीधे तवे पर रोटी बनती है, इनके यहाँ उल्टे तवे पर । हम लोग बाल मुडाते हैं, ये लोग नुनी कटाते हैं। '' [22] सांप्रदायिकता की धधकती हवा उनके नस - नस में भरी हैं।

शौकीन एवं व्यसनी :-

पं. अशोककुमार पाण्डे हमेशा इलाहाबाद जाकर फिल्म देखता है। लौटते वक्त गुलशन नंदा अथवा प्यारेलाल आवारा के उपन्यास खरीद लेना, शहर में मोटरसाइकिल पर धूमते रहना आदि उसके शौक हैं, होटल में जाकर महँगी - ऊँची चीजे खाता हैं, शराब पिता है। घर में बडों का आदर करने का नाटक रचता हैं लेकिन बाहर अपने मन से व्यवहार करता है। वह मनमौजी और मस्तमौला शौकिन किस्म का व्यक्ति हैं।

अंधश्रध्दालू :-

पं. अशोककुमार पाण्डे शिक्षित होने के बावजूद भी ताहिरा को पाने के लिए ज्योतिष विद्या का सहारा लेता है, तथा बिशुन भाट के बताए हुए मार्गों के अनुसार आचरण करता है। इन प्रसंगों से उसके अंधविश्वासू होने के दर्शन होते हैं।

प्रेमी अशोक :-

अशोककुमार पाण्डे अली अहमद की लडकी ताहिरा से प्यार करता है, और अपने प्यार का इकरार करने के लिए खून से खत लिखता है। अपना धर्म छोडने के लिए भी तैयार होता है उसका कथन है '' डार्लिंग ताहिरा, मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ। मुहब्बत आँधी होती है। समझ लो मैं भी अंधा हो गया हूँ। यद्यपि तुम्हारा और मेरा धर्म अलग - अलग है, मगर प्रेम के मार्ग में धर्म का कोई बंधन नहीं होता। यदि तुम मुझे स्वीकार कर लो तो मैं अपना धर्म छोड दूँगा।'' [23] उसका व्यक्तित्त्व विसंगत हैं। वह एक तरफ मुसलमानों से नफरत करता है, तो दूसरी तरफ मुस्लिम युवति के खातिर धर्म बदलना चाहता हैं।

नेता अशोककुमार :-

अशोककुमार बलापुर गाँव के जमींदार हैं और गाँव में नेतागिरी भी करते हैं। छीतूपुर के स्कूल में अध्यापक का काम करते हैं तथा विद्यालय के इंस्पेकशन के दिन इंस्पेक्टर द्वारा पूछे गये सवालों का अकेले सामना करके जवाब देते हैं, जिससे विद्यालय की इज्जत बच जाती है। विद्यालय के अन्य अध्यापकों को जरूरी प्रमाणपत्र तथा कागजात जूटाने के लिए सहायता करते हैं, जिससे उनकी रोखी हूई तन्ख्वाह शुरू हो जाती है। इन सारी घटनाओं से अन्य सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं के कर्मचारी भी उनसे मदद माँगते हैं। इन प्रसंगों से उनकी नेतागिरी की पहचान होती है।

इसके अलावा दृढनिश्चयी, भ्रष्टाचारी, महत्त्वाकांक्षी आदि गुण भी उनके भीतर समाएँ हैं।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत उपन्यास के पुरूष पात्र विभिन्न सामाजिक वर्ग के प्रतिनिधि लगते हैं। ये पुरूष पात्र हिंदू तथा मुस्लिम धर्म से संबंधित हैं। ऊपरी तौर से इन पात्रों में वर्गीय, धार्मिक एवं सांप्रदायिक भेदभाव होने पर भी प्रेम के स्तर पर वे इन भेदाभेद को भूल जाते हैं। इनमें से कई पुरूष पात्र जमींदार वर्ग से संबंधित हैं जिनमें जमींदारी टूटन के कानून के बाद भी जमींदारी प्रवृत्ति की ऐंठन जगह - जगह पर दिखाई देती हैं। इस्लाम धर्म के पात्र अपने धर्म के प्रति ईमानदारी जताते हैं। अनेक आमिशों के बावजूद भी धर्मपरिवर्तन करना नहीं चाहतें। वे भारतभूमि के प्रति प्रेम और ईमानदारी जताते हैं। अली चुड़िहार उसका बेटा बुध्दू इसी प्रवृत्ति के इन्सान हैं। जीवन संघर्ष करते - करते वे अनेक अवमानों के शिकार बनते हैं।

पुरूष पात्रों में अनेक पात्र परंपरावादी हैं, तो नई पीढ़ी के पात्र आधुनिकता के शिकार बने हुए हैं। बुध्दू और पंडित अशोककुमार पाण्डे इसके उदाहरण हैं। स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यास 'मुखड़ा क्या देखे' के पुरूष पात्र युगबोध, कालबोध, आधुनिक बोध के वाहक है। परिवेश और परिस्थिति की उपज है।

2.2 नारी पात्र

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के महत्त्वपूर्ण नारी पात्र और उनकी चारित्रिक विशेषताएँ देखेंगे -

रनिया

रनिया अली अहमद की बीवी है। उपन्यास में अली अहमद का व्यक्तित्व अंत तक संघर्षरत रहा है, जिसके कारण रनिया भी अपने पती के साथ इस संघर्ष की ज्वाला में जलती रहती है। उस ज्वाला में निखरे हुए कुछ पहलू उसके चरित्र में दिखाई देते हैं वे इस प्रकार हैं -

अन्यायग्रस्त :-

बलापुर गाँव में अली तथा रनिया और पिछडे वर्गों की तरह जमिंदारों और पूंजीपती लोगों से शोषित है। गरीब तथा अभावग्रस्त होने के कारण हर तरह का जुल्म वह सहती रहती है। रनिया अपने पती तथा बच्चे की बेइज्जती भी सहन करती है। बुध्दू निर्दोष होने पर भी उसे गिरफ्तार किया जाता है, इससे वह छाती पीट पीटकर रोती हैं, और अल्ला से इंसाफ की माँग करती हैं। पाण्डेजीद्वारा अली को पीटने पर भी वह अपने छोटे होने, गरीब होने तथा नसीब को दोषी ठहराती है।

ममतामयी और स्वाभिमानी :-

रनिया अपने परिवार का बड़ा ही खयाल रखती है। अपने पती और बच्चे से बहुत प्यार करती है। पतरस के द्वारा बुध्दू को विलायत भेजने के प्रस्ताव को अलीद्वारा बताने पर वह इसे ठूकराते हुऐ कहती है- " आग लगे उनके विलायत को। एकठे तो लड़का है, उसे मैं आँख से दूर होने दूँगी ? " [24] इस कथन से उसके ममत्व के दर्शन होते है। अलीद्वारा चूडी पहनाना भूल गई हो क्या ? ऐसा पूछने पर उसका उत्तर देती हुई रनिया कहती है - " भूलूँगी क्यों, कहीं कोई अपना खानदानी पेशा भी भूलता है। " [25] इस उत्तर से अपने खानदानी पेशे के बारे में उसके मन में जो अभिमान हैं वह स्पष्ट होता है।

संवेदनशील नारी :-

रनिया संवेदनशील नारी है। उसे अपने परिवार के बारे में प्यार होने के कारण वह किसी से भी अपने बच्चे और पती के बारे में बूरा सूनती है, तो वह निराश होती है। मुडकी में बिट्टन खालाद्वारा अपने शौहर का अपमान सुनकर रनिया रोने लगती है। बुध्दू के बेहोश होकर गिरने की खबर से वह छाती पीटकर रोती है। नुरू की लडकी का रिश्ता टूटने पर भी उसकी आँखे भीग जाती है। बुध्दू

के गिरफ्तारी पर तो वह रोते हुए अल्ला से मदद की याचना करती है। इन प्रसंगों से उसके संवेदनशील रूप के दर्शन होते हैं।

अभावग्रस्त :-

रनिया अपने पती के तरह ही घरखर्चे के लिए पैसा कमाने के लिए काम करती है, फिर भी चुडियों का कारोबार चलाने के लिए तथा अपने भउजी से लिऐ हुए पैसे वापस करने के लिए चिंतित रहती है। पैसों के अभाव में उसके चेहरे पर हमेशा चिंता की लहर दिखाई देती है।

स्वदेशप्रेम :-

रनिया एक संघर्षशील नारी है, बलापुर गाँव में उच्चवर्णीयोंद्वारा हमेशा उसके परिवार का शोषण होता है, तथा उसके पती को मार - पीट करके बेइज्जत किया जाता है, फिर भी उसे अपने देश एवं मुल्क से प्यार है। भारत - पाकिस्तान के जंग के समय - भारत की जीत होने पर झठ से अपने पती से लिपट जाती हैं, और उत्साहित होकर अपने पती को कहती है - '' अपना देस तो जीत गया जंग में।'' [26] उसका यह जोश और आनंद उसके देशप्रेम को उजागर करता है। अली अहमद की मृत्यु के बाद भी वह बुध्दू को अपने पती की इच्छा बताते हुए कहती है'' तुम्हारे अब्बा की यही ख्वाहिस रही बेटवा कि ऊ गाँव - देस न छोडेंगे।'' [27]

परंपरावादी :-

बुध्दू के डाक्टर होने के बावजूद भी रनिया अपना खानदानी पेशा नहीं छोडना चाहती। डाक्टरी पेशे में थोडा - बहुत पैसा मिलने पर बुध्दू अपनी माँ को आराम देना चाहता था, और बहन ताहिरा को शिक्षित करने के उद्देश्य से ताहिरा को चुड़ी पहनाने जाने नहीं देता तो रनिया को इससे बुरा लगता है, और वह कहती है '' अपने खानदानी पेसे को भूल जाना भलमनइन का काम नहीं है।'' [28] इससे उसके परंपरावादी रूप के दर्शन होते हैं।

सत्तार की अम्माँ

जब्बार मौलवी साहब की बीवी तथा सत्तार की अम्माँ के नाम का पूरे उपन्यास में कहीं भी उल्लेख लेखक ने नहीं किया। 'सत्तार की अम्माँ' अथवा 'भाभी' के नाम से ही उनका चित्रण हुआ है। उनकी कुछ चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

स्वच्छंदतावादी :-

सत्तार की अम्माँ स्वच्छंदी प्रवृत्ति की नारी है, उसे पूरा गाँव भाभी कहता हैं, और वे गाँव के हर बडे - छोटे मर्द से मजाक करती है, लेकिन कोई भी इसका बुरा नहीं मानते एक दिन रास्ते पर राधे लुहार पेशाब कर रहा था, तब सत्तार की अम्माँ उसे एक कंकडी उठाकर मारते हुए कहती है - " अरे दहिजरा के नाती, तुम्हें यहीं जगह मिली है मूतने को ? " [29] ऐसा कहकर हसती है, तो राधे लुहार भी हँसकर जवाब देता है " बाह भाभी, आज़ादी मिल गई मुलाँ पेसाबौ करे में आफत।" [30] इस प्रसंग से उसके स्वच्छंद प्रवृत्ति का परिचय प्राप्त होता है।

सहानुभूति प्रवृत्ति की पक्षधर :-

सत्तार की अम्माँ सहानुभूती प्रवृत्ति की पक्षधर स्त्री है वह गाँव के हर छोटे - बडे लोगों की मदद करती है। जब्बार मौलवी साहब को यह सब पसन्द न होने के बावजुद भी समाज के पिछडे वर्गों के लोगों के साथ भी उसका अच्छा व्यवहार हैं। बुध्दू के पैदा होने के समय इस संकट की घडी में रात के अंधेरे में आकर वह अली महमद की मदद करती है, साथ ही अली की भउजी पर ऐसे समय मदद के लिए न आने पर बरस पडती है। इन प्रसंगों से उसके दयाशील तथा सहानुभूतीपूर्ण प्रवृत्ति का अंकन होता है।

धर्म तथा जाति के प्रति निष्ठा :-

सत्तार की अम्माँ भी इस्लाम के कडे नियमों का पालन करती है। उसे भी अपने मुस्लिम होने का अभिमान हैं। गाँव के लोग कभी - कभी अनजाने में सत्तार की अम्माँ को 'भाभी' की जगह 'भउजी' कहकर पूकारते हैं तो उसे अच्छा नहीं लगता क्योंकि वे 'भउजी' उस लफ्ज को हिंदू लफ्ज मानती है। जब्बार मौलवी साहब इसके विरोधी हैं, इसलिए उन्होंने सबको सख्त निर्देश दिए है कि उन्हें भाभी कहकर पुकारा करे इस व्यवहार से उनके पूरी तरह इस्लामनिष्ठ होने के प्रमाण प्राप्त होते हैं।

स्वदेशप्रेम :-

सत्तार की अम्माँ को अपने देस और मुल्क से प्यार है, तथा यहाँ के लोगों का और उनके व्यवहार का भी उन्हें अभिमान है। सत्तार के गाँव छोडने के कारण उन्हें दुःख होता है, वह स्त्रियों को बताती है कि " हम बहुत समझाए बिटिया, मुलाँ सत्तार माना नहीं। " [31] एक स्त्री भाभी को उनके न जाने का कारण पूछती है, तो इस पर उनका उत्तर है, " हम काहे जाएँ। हमारा पूरा खानदान चला गया पाकिस्तान, मुलाँ हम नहीं गए। का पाकिस्तान से बडी जगह है ई इलाहाबाद। बारा बरस की उमर में हम हियाँ बहू बनके आए रहीं, तब से ई बलापुर ने हमें अपनी बिटिया की तरह माना। अउर आज हम पूरे गाँव की भाभी

हैं। का कमी हैं हम्मे इहाँ।'' [32] इस कथन से उनके दिल में छिपी देशप्रेम की भावना उजागर होती है। उन्हें भारत देश के प्रति प्रेम होने के कारण बंटवारे में वह देश छोडकर पाकिस्तान जाना नहीं चाहती।

विद्रोह, अन्याय का विरोध संवेदनशीलता :-

बलापुर में एक दिन बेसहारा, असहाय लल्लू की हत्या हो जाती है, लेकिन इस घटना से किसी को कोई फर्क नहीं पडता, लेकिन सत्तार की अम्माँ वृध्दावस्था में भी वहाँ पर आकर लाश पर गिरती है और दहाड मारकर रोती है। यह प्रसंग उसके संवेदनशीलता को प्रकट करता हैं। अचानक उठकर वह जमीं हुई भीड से आवाहन करती है '' खडे का हो, घूरपूर जाके रिपोट लिखाओ।'' [33] लेकिन भीड में से कोई भी व्यक्ति अपनी जगह से हिलता नहीं, तब सत्तार की अम्माँ जिसके हाथ - पाँव काँप रहे है, और खडी होकर कहती है '' हम जाइथे घूरपूर । हम लिखाएँगे रपट। नामजद। समझे ? ई ललुआ का नहीं पूरे गाँव देस की मरजाद का कतल है।'' [34] इन घटनाओं से सत्तार की अम्माँ का विद्रोही रूप और अन्याय के खिलाफ लडने के उसके क्रांतिकारी एवं पराक्रमी रूप के दर्शन होते हैं। साथ ही वह संवेदनशील होने के कारण दूसरों के दुःख से दुःखी होती है।

भूरी

भूरी भगतराम (तोते) पासी की नटखट लडकी है, जो जवान है और बुध्दू के साथ प्यार करती है। दोनों भागकर जाते हैं और शादी करके लौटते है। उपन्यासकार अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने 'भूरी' का उपन्यास में मुख्य नारी पात्र के रूप में चित्रण किया है उसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

नटखट उन्मुक्त स्वभाव :-

भूरी जवान लडकी है, उसका स्वभाव उन्मुक्त है, वह हमेशा खुश रहती है, वह शादी के पहले ही बुध्दू से अनैतिक संबंध रखती है, उसे अपने जवानी और जिंदगी के बारे में कोई चिंता या भय नहीं है। वह स्वच्छंद रूप से गाँव में घुमती फिरती है।

निर्भय :-

भूरी निर्भय लडकी है, वह किसी से भी नहीं घबराती और बुध्दू से भाग जाकर शादी करती है। रामलीला की रात उसका घर लूटा जाता है, तो वह बेहिचक गाँव के जमींदार पर आरोप लगाती हुई कहती है '' इ पाँडे महराज की कारस्तानी है अउर कुछ नहीं।'' [35] भूरी अपने प्यार को नहीं छिपाती वह अपने मर्जी से बुध्दू के साथ शारीरिक संबंध रखती है तथा उससे मिलने जाती है और उसे मिलने बुलाती है। इससे उसकी निर्भयता दिखाई देती है।

सच्ची प्रेमिका :-

भूरी जितनी ही उन्मुक्त और नटखट है, उससे भी ज्यादा वह एक सच्ची प्रेमिका है। बुध्दू के कहने पर बिना हिचकिचाहट करते वह भाग जाने को तैयार होती है, तथा अपने वादे और प्यार को निभाती है। वह बुध्दू से बहुत प्यार करती हैं। और लोगोंद्वारा टोकने पर भी उसे इस बात का बुरा नहीं लगता।

धर्मपरिवर्तन का समर्थन एवं निष्ठा :-

भूरी बुध्दू के साथ भाग जाकर शादी करती है। वह हिंदू होकर भी शादी के बाद इस्लाम धर्म का स्विकार करती है, तथा खुद को एक मुसलमान नारी मानती हैं इसका एक उदाहरण है, भूरी की लडकी अचानक बीमार होती है, तब गाँव की स्त्रियाँ उसे हनुमानजी के नाम का जाप करने की सलाह देते है, तो वह तत्काल उत्तर देती है - " मुलाँ हम त मुसलमान हैं काकी .....।" [36] जिससे उसका धर्मनिष्ठ रूप उजागर होता है।

सहज सरल स्वभाव की संवेदनशील नारी :-

भूरी सरल स्वभाव की लडकी है। वह किसी को बूरा नहीं कहती, शादी के बाद घर लौटने पर रनिया से मिलकर सिसककर रोती है। तथा बुध्दू के कहने पर वह बिना इन्कार किए काँख में गठरी दबाकर जहाँ वह ले चलें वहाँ जाने के लिए तैयार होती है। इससे उसके सरल, भोले, स्वभाव के दर्शन हो जाते हैं।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत उपन्यास के नारी पात्र पुरूष पात्रों की तुलना में अधिक संवेदनशील हैं। यहाँ रनिया, सत्तार की अम्माँ मुस्लिम नारी पात्र है, जो धर्म की एवं देशप्रेम की प्राणपन से रक्षा करना चाहती हैं। वे अपने परिवार के लिए लडती - झगडती हैं। संवेदनशील बनकर दूसरों की मदद भी करती हैं। इस्लाम धर्म के प्रति प्रेम रखकर भी दूसरे धर्म की नींदा नहीं करती है। भूरी हिंदू होकर भी मुस्लिम बुध्दू से प्रेम करती है। और प्रेम विवाह में परिवर्तित होने पर मुस्लिम धर्म स्वीकार करती हैं। वह इस्लाम के सभी तत्त्वों का अनुपालन करती हैं। ये तीनों नारियाँ नारी - धर्म को अबाधित रखकर अपने पति का साथ देती हैं। ये नारियाँ कुटुंबवत्सल और पतिधर्म निभानेवाली हैं।

2.3 गौण पात्र

उपन्यास विधा में मुख्य पात्रों के साथ - साथ गौण पात्र भी कथावस्तु को गति प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। गौण पात्र प्रमुख पात्रों का चरित्र स्पष्ट करने के लिए चित्रित किए जाते हैं। गौण पात्रों के चारित्रिक उथान - पतान तथा विभिन्न कार्य - कलापों से कथावस्तु प्रभावित रहती है, इसलिए उपन्यास में गौण पात्र अपना स्थान एवं महत्त्व स्थापित करने में सफल होते हैं।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में विभिन्न गौण पात्रों का चित्रण किया है, उसका विवेचन यहाँ इस प्रकार प्रस्तुत है -

जब्बार मौलवी

जब्बार मौलवी बलापुर के मुस्लिम जमींदार है, रामवृक्ष पाण्डेजी के साथ उनका उठना बैठना है। अली अहमद जब उनसे अपनी मार पीट के बारे में बताने जाता है, तो वे अली अहमद की बात को अस्वीकार करते हैं। जब्बार साहब अपने आप को ऊँचा मुसलमान समझते हैं, और इन छोटे - छोटे मुस्लिम लोगों के साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहते। वे अपनी बीवी को कहते है ''देखो सत्तार की अम्माँ, मैं कहे देता हुँ तुमसे इन धुनियों चुड़िहारों के घर तुम न जाया - आया करो। इन्हें सिर पर चढ़ाने की कोई जरूरत नहीं है। तुम क्या समझती हो कि इस चुड़िहार की जात के वास्ते मैं पंडितजी से दुश्मनी मोल लूँ ? '' [37] मुस्लिम जातियों में भी ऊँच - नीच के भेदभाव है, वे यहाँ स्पष्ट होते है।

जब्बार मौलवी साहब को निम्नवर्गीय मुस्लिम समाज के लोगों का घर आना - जाना अच्छा नहीं लगता। जब्बार साहब को अपनी बीवी को 'भाभी' कहने पर गुस्सा आता हैं। वे इस लफ्ज़ को 'हिंदू' लफ्ज़ मानते हैं, और खुद को उच्चवर्गिय मुसलमान। इसलिए हिंदूओं की किसी रीती - परंपरा का अनुकरण नहीं करना चाहते।

अली अहमद पाण्डेजी की शिकायत के लिए पं. नेहरूजी के पास इलाहाबाद जाने की खबर मिलते ही मौलवी साहब तिलमिला उठते हैं। वे सोचते हैं कि अली आज पाण्डेजी के खिलाफ आवाज उठाता है, कल उनके खिलाफ भी आवाज उठा सकता हैं। इस डर से वे चिंतित होकर यह खबर तात्काल पं. रामवृक्ष पाण्डेजी को देते हैं जिससे वे अली की हमेशा के लिए आवाज मिटाने और उनको तथा उनके परिवार को उससे कोई खतरा न हो जाए। इस की व्यवस्था करते हैं।

यहाँ उपन्यासकार ने जब्बार मौलवी को एक शोषक पूंजीपति मुस्लिम जमींदार के रूप में चित्रित करके मुस्लिमों के ऊँची जाति के लोग कैसे कट्ठर जातीयवाद को उभारते हैं, इसे स्पष्ट किया हैं।

लल्लू

लल्लू जाति का भाट है। बिशून भाट का लडका लल्लू आठवीं कक्षा में पहुँचते ही स्वाधीनता आंदोलन में सम्मिलित हो गया। हालाँकि बिशून भाट उसे पढ़ा लिखाकर डॉक्टर बनाने के लिए विलायत भेजना चाहते थे मगर आजादी की

लडाई में अंग्रेज पुलिसोंद्वारा लल्लू बुरी तरह पीटा जाता है, जिससे वह पागल होता है। वह पागल होते हुए भी अँग्रेजी का इतना ज्ञानी है कि हर एक वाक्य को वह अँग्रेजी में बोलता हैं, जवाब देता हैं तथा गाना गाता है वह भी अँग्रेजी में। उसे एलिजाबेथ और क्वीन विक्टोरिया से सहानुभूति है और वह इसे बार - बार प्रकट करता है। आजादी मिलने पर आशा थी लल्लू ठीक हो जाएगा मगर कोई फर्क नहीं पडा। देशी उपायों का सहारा भी लिया, दुआ - ताबीज भी किए ताबीजों से लल्लू की गर्दन भर गई परंतु अधिक असर नहीं पडा।

लल्लू एक दिन मुन्ना नचनिया और सृष्टिनारायण पाण्डे को एकसाथ एक कमरे में देखता हैं, जिस कारण उसे सृष्टिनारायण पाण्डेजी की मार खानी पडती हैं। वह गाँव के रामलीला, नौटंकी में भी काम करता हैं, उसे बुध्दू और भूरी के प्यार के बारे में जानकारी हैं, उन्हें एकसाथ कई बार देखता हैं, जिस कारण वह बुध्दू को '' जब लव किया तो डरना क्या, लव किया एनी चोरी नहीं की .....।'' [38] कहकर हमेशा चिढ़ाता है। वह लखनऊ के इंग्लिश टॉकिंग कॉंपिटीशन में फर्स्ट आने का हमेशा दावा करता हैं। वह देश की प्रधानमंत्री इंदिराजी से प्यार करने और उन्हें लवलेटर लिखने की बात भी सबको बताता है। दिनभर मस्ती करता है, छोटे तथा युवा बच्चों का मनोरंजन करता है। अपने पिताजी (बिशुन भाट) की मृत्यु का उसे गहरा दुःख होता है। जिस दिन बलापुर में अशोककुमार पाण्डे के 'सरस्वती शिशु मंदिर' का एलान जारी था तब लल्लू अपने घर के बाहर खडा रहकर अँग्रेजी में गालियाँ दे रहा था। उसी दिन दोपहर को उसकी हत्या हो जाती है। लेखक ने बुध्दू के चरित्र के ईमानदार, देशप्रेमी, सरल स्वभाव, वास्तववादी, शोषित आदि गुणों को उजागर करने का प्रयास किया है।

पतरस

रूपसिंह गोंड नाम के व्यक्ति ने ईसाई धर्म स्वीकार किया और अपना नाम बदलकर 'पतरस' रखा, जो दुल्लोपुर में ईसाई धर्म का प्रचार - प्रसार करता हैं। अली अहमद के दुल्लोपुर पहुँचने पर उसकी घर - गृहस्थी बसाने में पतरस मदद करता है, उसे दुकान खोलने में मदद करता हैं। अली अहमद को दलाल चच्चा की मृत्यु की खबर भी पतरस ही देता है।

पतरस अली अहमद को ईसाई धर्म स्विकारने तथा उससे मिलनेवाले लाभों से अवगत करता है। अली को नौकरी देना तथा उसके बच्चे बुध्दू को शिक्षा के लिए विलायत भेजने की बात कहकर उसे प्रोत्साहित करने की कोशिश करता है। पतरस को देश के इलेक्सन में काफी रूची है, वह देश के राजकीय स्तर पर होनेवाले सभी हलचलों की खबर रखता हैं, तथा उसकी इच्छा है कि देश के सभी ईसाई लोगों ने कॉंग्रेस को ही वोट देने चाहिए।

पतरस अपनी बेटी की शादी के विषय से चिंतित है, क्योंकि इस इलाके में ईसाई परिवार बहुत ही कम है। पतरस अली को बुध्दू के लिए परंपरागत भारतीय शिक्षा छोडकर उसे अँग्रेजी शिक्षा देकर साहब बनाने के लिए कहता है। पतरस के चरित्र को लेखक ने ईमानदार, धार्मिक तथा व्यवहारकुशल आदि गुणों से चित्रित किया है।

मुन्ना

मुन्ना चमरौटी का रहनेवाला है, अपने बूढे माता - पिता का पेट पालने के लिए वह मजदूरी करता है। पं. सृष्टिनारायण पाण्डे के कहने पर मजदूरी छोडकर उनके साथ रहता है। मुन्ना नाच - नौटंकी में स्त्रियों की भूमिका अदा करता है। साडी - ब्लाउज में तो वह बिल्कुल लडकी जैसा दिखाई देता है। मुन्ना अपनी सारी जिंदगी पंडित सृष्टिनारायण जी को अर्पण करता हैं। पंडितजी ने उसे रखैल बनाया है। मुन्ना के उपर पंडितजी सट्टा भी लगाते हैं दिन रात वह पंडितजी की सेवा करता है।

मुन्ना जैसे - जैसे जवान होता है, पंडितजी उसमें पहले जैसे रूचि नहीं दिखाते बहुत दिनों तक उसे कोई मदद भी नहीं करते। मुन्ना इसका पंडितजी से कारण पुछता है, तो पंडितजी उसकी बेइज्जती करते हैं मुन्ना उनसे कहता है "बाह महाराज, ऊ दिन भूल गए का, जब हम्में बगल में लेके सोते थे ? " [39] इस पर पंडितजी मुन्ना को मारते - पीटते हैं। मुन्ना के मन में यह अपमान, अत्याचार जहर बनकर हमेशा के लिए रह जाता है।

बिशुन भाट के जिंदगी के अंतिम दिनो में मुन्ना उनकी सेवा करता है। बिशुन पंडित ज्योतिष विद्या की पुस्तक मुन्ना के हाथों में सोंपकर इसका अध्ययन करने तथा जिंदगी में पेट भरने के लिए इसका सहारा लेने की सलाह देते हैं। बाद में मुन्ना बलापुर छोडकर चला जाता हैं।

एक दिन बलापुर में एक साधु महात्मा आते हैं, उनका नाम सच्चिदानंद महाराज हैं, वे ज्योतिष विद्या में ज्ञानी माने जाते हैं। महात्माजी का शिष्य भानूप्रताप एक दिन सृष्टिनारायण पाण्डे की हत्या के बारे में सच्चिदानंद महाराज से पूछता है, तो वे बताते है कि सृष्टिनारायण पाण्डे की हत्या मुन्ना चमार ने की है, और वह मुन्ना चमार आज सच्चिदानंद महाराज बनकर तुम्हारे सामने बैठा है।

उपन्यासकार ने शोषित, ईमानदार, अन्यायग्रस्त, विद्रोही, स्वाभिमानी आदि रूपो में मुन्ना को चित्रित किया है, और उसके जीवन के विविध पडावों को दिखाया हैं।

बवाली

बवाली क्रांतिकारी विचारों का आदमी हैं। बवाली अपने भाई की मदद से बुध्दू को डाक्टर बनाता है। वह समाज में स्थापित अन्याय - अत्याचार को जमींदार पूंजीपती लोगों की देन समझता हैं। ज़ब तक धनी लोग और नेता लोग समाज में रहेंगे तब तक गरीबों का शोषण होता ही रहेगा ऐसी उसकी धारणा हैं। जब अशोककुमार मोटरसाइकिल से धूल उडाता हुआ उसके बगल से गुजरता है, तब वह कहता है - "सब पूँजीखोरवन का एक दिन नास होगा देखते रहना।" [40] बवाली किसानों और मजदूरों का संगठन बनाकर सशस्त्र क्रांति करना चाहता है। वह स्वाधीनता का श्रेय गांधीजी तथा नेहरू को नहीं देना चाहता उसके विचार में "आजादी दिलाई है भगतसिंह, असफाकुल्ला खाँ अउर चंद्रशेखर आजाद की सहादत ने।" [41]

बवाली को सभी 'नक्सलाइट' कहते है। बवाली लता को भी समाजसुधार के कार्य में सहयोग देने का आवाहन करते हुए कहता है - "अगर आपका सहयोग मिल गया न, तो हम गाँव - जवार क्या, पूरे देस की व्यवस्था को चंद बरसो में ही बदलकर रख देंगे।" [42] बवाली के अनुसार बलापुर में जब तक सृष्टिनारायण जिंदा है, तब तक अन्याय और शोषण होता रहेगा इसके लिए उसका काम तमाम करने की वह बात करता है। बलापुर में जब सृष्टिनारायण की हत्या के बाद तीन बेगुनाहों को गिरफ्तार किया जाता हैं, तब इसके लिए वह जमींदार लोगों को जिम्मेदार मानता है। गाँव के लोगों को अन्याय के खिलाफ लडने के लिए प्रेरित करते हुए बवाली लोगों को इकट्ठा होने का आवाहन करता है तथा जीवन में खुशहाली लाने के लिए क्रांति करने की सलाह देता हैं। इसी अन्याय के खिलाफ लडने और लोगों में जागृति निर्माण करने के कारण अशोककुमार के कहने पर पुलिस बवाली को गिरफ्तार करती हैं।

बवाली उग्र स्वभाववाला, स्वाभिमानी, क्रांतिकारी विचारों का अन्याय के खिलाफ लडनेवाला, मार्क्सवादी विचारधारा का व्यक्ति है। बवाली क्रांति करके साम्यवादी समाज की स्थापना करना चाहता हैं।

सत्तार

सत्तार जब्बार मौलवी साहब का इकलौता बेटा है, जो बलापुर के पोस्ट ऑफिस में पोस्टमास्टर है। सत्तार भी अपने अब्बा की तरह कडा धार्मिक और जातीयवादी इन्सान हैं। पंडितजी के घर कथा का आयोजन था तब वह बैठे सभी मुसलमानों से आवाहन करता है कि - "सुनो पंजीरी ले तो लेना, पर उसे खाना हर्गिज नहीं।" [43] इस पर सभी लोग हैराण होते हैं, सिपाही नाउ का बेटा कारण पूछता है तो सत्तार कहता है - "जानते नहीं क्या, पंजीरी में ये लोग चरनामृत भी डालते हैं। और चरनामृत में क्या होता है जानते हो ? उसमें गाय का पेशाब मिला होता है।" [44] सत्तार पोस्टआफिस में जमा बचनखातों में से बावन हजार रूपयों का गबन करता है, इससे उसे काम से निकाल दिया जाता हैं। जिससे वह हमेशा परेशान रहता हैं। लोग उसे पोस्टमास्टर कहकर पुकारते हैं, तब वह लज्जित होकर कहता है अब मुझे पोस्टमास्टर न कहा करो।

सत्तार अब बलापूर में रहना नहीं चाहता था। अम्माँ के लाख समझाने के बावजूद भी वह अपनी बीवी को लेकर और अम्माँ को वही छोडकर एक रात बलापुर हमेशा के लिए छोडकर जाता है। यहाँ लेखक ने भ्रष्टाचारी, जातीयवादी, पलायनवादी आदि के रूपो में सत्तार का चित्रण खींचा हैं।

बंगाली बाबू

बांगलादेश की निर्मिती के समय हजारों परिवार हिंदुस्थान आकर रहने लगे थे उनमें से एक बंगाली बाबू अपनी पत्नी के साथ उत्तर प्रदेश के बलापुर में आए थे। बंगाली बाबू बहुत ही नेक और सीधे स्वभाववाला है। रनिया की चुड़ियों की टोकरी देखकर उसके मन में भी अपनी पत्नी के लिए चुड़ियाँ पहनाने की इच्छा निर्माण होती है, और वह अली से कहकर रनियाद्वारा अपनी पत्नी को चुड़ियाँ

15485

पहनाता है। बांगलादेश की आजादी के बाद सभी बंगाली लोग चले जाते हैं मगर बंगाली बाबू हिंदूस्थान छोडकर नहीं जाना चाहते, इसका कारण पूछने पर बंगाली बाबू कहते है - ''अमारा जवान बेटा मार दिया गया। अमारा घर लुट गया। अब हम क्या करेगा जाके। हमें जीवनदान दिया इंडिया ने, तुमारे गाँव ने। अम अब इसी ज़गह रहेगा।'' [45]

सत्तार की गाँव छोडकर जाने की बात नापसंद करते हुए वे कहते है '' कुछ भी हो, शोत्तार बाबू को गाँव नई छोडना था।'' [46] '' और नई तो क्या ? अम्में देखो अम इशी गाँव में रूक गए कि नई। जब कि कौन बैठा है याँ आमरा। मगर अब शब अपने लगते है।'' [47] लेखक ने स्वाभिमानी, दिलेर, नेक, व्यवहारकुशल आदि के रूप में बंगाली बाबू के चरित्र को उभारा हैं।

लता

लता रामवृक्ष पाण्डेजी की लडकी है, विवाह के बाद वह बलापुर में अध्यापिका बनकर आती है। लता का अपने ससूराल तथा मायके से संबंध टूट चुका है। सभी लोग पाण्डेजी की मृत्यु का कारण लता को ही ठहरातें हैं। वह आधुनिक विचारों की है, जात - पात, ऊँच - नीच भेदाभेद नहीं मानती। उसका कहना है कि हमारे - तुम्हारे या किसी एक व्यक्ति के बदलने से देश में प्रगती नहीं हो सकती इसके लिए लोगों की मानसिकता बदलने की जरूरत है। बलापूर में होते हुए भी उसके घरवाले उससे नहीं मिलना चाहते सिवाय माँ के। अली पूछता है घर क्यों नही गई, तो वह जवाब देती है '' मैं इस गाँव में सिर्फ एक अध्यापिका भर हूँ चच्चू और कुछ नहीं। आप भी यही समझिए। '' [48] इस कथन से उसके हृदय का दर्द स्पष्टतया उमडकर आता हैं। लेखक ने स्वाभिमानी, व्यवहारकुशल, आधुनिक, दृढनिश्चयी आदि रूपों में लता के चरित्र - चित्रण को साकार किया हैं।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत उपन्यास के गौण पात्र अपनी स्वतंत्र कथा लेकर उपन्यास में उतरते हैं और मुख्य कथा को बढ़ावा देने का काम करते हैं। मौलवी जब्बार मुस्लिम जमींदार है और वह मुसलमानों की हीन जातियों की घृणा करता है। लल्लू आजादी की लडाई में अँग्रेज सरकार की पुलिसोंद्वारा हुअी पीटाई में पागल बन जाता हैं, पतरस गोंड होते हुए भी खुद के फायदे के लिए ईसाई बन गया है और दूसरों का भी प्रबोधन करके ईसाई धर्म का प्रचार एवं प्रसार करना चाहता हैं। मुन्ना चमार हैं और नचनिया का अभिनय करता है। सृष्टिनारायण उसका दैहिक शोषण करते हैं। बवाली क्रांति का पक्षधर हैं वह साम्यवाद के लिए क्रांति करना चाहता हैं। सत्तार पोस्टमास्टर हैं, जो अपने अधिकार में पोस्ट ऑफिस की रकम का गबन करता हैं। बंगाली बाबू शरणार्थी है और वह भारत में ही रहना पसंद करता है। ये सारे गौण पात्र विभिन्न जाति बिरादरियों के हैं, जो मुख्य कथा में रंग भरने का काम करते हैं।

2.4 पात्रों का बाहुल्य

आधुनिक उपन्यासो में 'पात्रों का बाहुल्य' एक महत्त्वपूर्ण खोज बनकर सामने आयी है। '' हिन्दी के साठोत्तरी उपन्यासों में चरित्र की उन्नत स्थिति बहुत समय तक नहीं टिकी। उपन्यास चरित्र - तत्त्व के आघात अनेक दिशाओं में झेलने पड रहे हैं।'' [49] आधुनिक उपन्यासो में उपन्यासकार किसी पात्र विशेष के साथ कथा का संबंध नहीं जोडता तो वह एक दूसरे से भिन्नता रखनेवाले सभी विशेष पात्रों के माध्यम से कथा को आगे प्रवाहित करता हैं। पुराने उपन्यासों की तुलना में आधुनिक उपन्यासो में पात्रों की संख्या अधिक है।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में वर्णित पात्रों का बाहुल्य इसी तथ्य की उपज है।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में अनेक पात्रों के जीवन - संघर्ष से कथा का ताना - बाना बुना गया हैं। हर एक पात्र अपनी एक उपकथा लेकर मुख्य कथा के प्रवाह में आता है और अपना अलग अस्तित्त्व खोकर स्वयं कथा का एक अटूट हिस्सा बन जाता है।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में पंडित रामवृक्ष पाण्डे, अली अहमद चुड़िहार, पं. सृष्टिनारायण पाण्डे, पं. शिवपुजन तिवारी, लता, पं. रामवृक्ष पाण्डेजी की पत्नी, बिशुन भाट का पागल लडका लल्लु , रनिया, अली की भउजी, बिशुन भाट, जब्बार, मौलवी साहब, सत्तार, सत्तार की अम्माँ, राधे लुहार, फुल्ली दाई, सोमारू भड़भूँजा, मोती बनिया, फुल्ली दाई की नातिन रामकली, मखदूम नाऊ, नैनी की दुकानदारिन, पनवाडी, डॉ. रफी अहमद उर्फ बुध्दू, नूरू भाई, पतरस, नूरू की बीवी, इंडियन फादर अशोक फ्रांसिस, पतरस की बीवी, जलील, खलील, बिट्टन खालाँ उसका लडका, राबिया, जलिल की बीवी, करीम, सलीम, रामदेव चमार, दसरथ गोंड, सिंधी दुकानदार, पं. दयाशंकर पाण्डे, पं. अशोककुमार पाण्डे, मुहम्मद भाई, शब्बीर चुड़िहार, कल्लू चुड़िहार, मनिहारिन, फतेमोहम्मद की बीवी, उपधिया बाबा की पत्नी, मुन्ना नचनिया, मनोज लालजी, ताहिरा, भगतराम पासी, भूरी, जमुना, भूरी का मौसेरा भाई दुलारे, जवाहर हलवाई, सिपाही नाऊ का लडका, दयाशंकर पाण्डे का छोटा लडका राजीव, मोती बनिया का लडका मानिक, रामदेव का लडका मंगरू, ननकुआ, रामेश्वर मौर्य, बंगाली बाबू, सिपाही, बंगाली बाबू की पत्नी, अल्ली अहमद की छोटी लडकी मुन्नी, अजय, बवाली, रामशंकर पाण्डे उर्फ रामू पहलवान, भूरी की माँ, अशोक के दो युवक मित्र, लल्लन श्रीवास्तव, इक्बाल बहादूर श्रीवास्तव, दीनानाथ शुकुल, भोला पासी, परसोत्तम यादव, जवाहर हलवाई की बहू, भानुप्रताप आदि कुल छिहत्तर पात्र इस उपन्यास में आये हैं।

अब्दुल बिस्मिल्लाइजी ने उपन्यास की कथा को शुरू से लेकर अंत तक अस्थिर रखा है। उपन्यास का मुख्य पात्र अली अहमद और उसका परिवार अन्यायग्रस्त एवं अभावग्रस्त हैं। वे न्याय के लिए तथा पेट भरने के लिए एक जगह से दूसरी जगह स्थलांतरित होते हैं, जिससे नए - नए लोगों के साथ उनका संबंध स्थापित हो जाता है। तत्कालिन राजकीय सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिस्थिति के कारण इस उपन्यास के नए परिवेश में पात्रों की भीड़ दिखाई देती

हैं। पात्रों की भीड़ होने के बावजूद भी हर एक पात्र अपना स्वतंत्र अस्तित्त्व अबाधित रखकर अपनी आवश्यकता को सिद्ध करने में सफल हुआ हैं।

उपन्यास के गौण पात्र भी अपने कार्य - कलापों से मुख्य कथा को प्रभावित करते हैं, जिससे उपन्यास में मुख्य पात्र और गौण पात्रों के बीच के अलगाव दिखाना असंभव होता हैं। उपन्यासकार ने इतने सारे पात्रों की भीड़ में भी हर एक पात्र को अपने अस्तित्त्व के उभार में मौका दिया हैं। उपन्यास के सभी पात्र अपनी हरकतों या क्रियाकलापों से कथा को अपनी ओर खींचते हैं। उपन्यास में लेखक ने घटनाओं की भरमार की हैं, जिससे हर एक घटना, नए - नए पात्रों को लेकर उद्घाटित होती हैं, और अंततः कथा में पात्रों की संख्या में निरंतर वृध्दी होती जाती हैं, अतः एवं उपन्यास में पात्रों का बाहुल्य उजागर होता है। पात्रों की भीड़ में मुख्य पात्रों का प्रभाव कभी - कभी खो जाता है, अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों की विशेषता पात्रों के बाहुल्य में दिखाई देती है।

2.5 पात्रों के चरित्र - चित्रण में आधुनिकता

स्वाधीनता के बाद शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के कारण भारत देश में आधुनिकता की हवा उभरकर आयी। औदयोगिकीकरण के कारण उद्योगधंदों में वृध्दी हुई है। सामान्य आदमी परंपरागत व्यवसायों को छोडकर शहरों की ओर चलता रहा, मानव का अपना रहनसहन बदल गया, मनुष्य के विचारों तथा व्यवहारों में पहले जैसी पुरानी प्रणाली नष्ट होने लगी, भारत के छोटे - छोटे गावों में विकास की गंगा बहती रही, साहित्य इससे अछुता एवं अलग नहीं रह सका। आधुनिकता का प्रभाव विभिन्न रचनाकार एवं उनकी रचनाओं में दिखाई देने लगा।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने भी अपने उपन्यास में इस आधुनिकता एवं परंपरागत रीति, मूल्यों, विचारों, व्यवहारों का चित्रण करके उनमें टकराव भी दिखाया। 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में आधुनिकता के पक्षधर पात्रों का विवेचन किस प्रकार किया गया है, इसे हम यहाँ देखेंगे -

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में अली अहमद, लता, बिशुन भाट, बुध्दू, बवाली, अशोककुमार पाण्डे, उनके दो मित्र तथा अजय आदि पात्रों के चरित्र - चित्रण में आधुनिकता के दर्शन होते हैं। अली अहमद अपने बच्चों को पढ़ा लिखाकर बडा करना चाहता है। बुध्दू की पढ़ाई छूटने पर उसे गहरा दु:ख पहुँचता है। उसके इस कथन से उसके आधुनिक विचारों के दर्शन हो जाते हैं - ''वो तो हमारी कमअकली और बदकिस्मती थी कि मार के डर से भाग गए और पढ़ - वढ़ नहीं सके। कम से कम तुम तो पढ़ लो।'' [50]

बिशुन भाट भी अपने बच्चे लल्लु को खूब पढ़ा लिखाकर डाक्टरी विद्या सीखने के लिए विलायत भेजना चाहता है, वह भी आधुनिकतावादी दिखाई देता है।

बुध्दू उर्फ डॉ. रफी अहमद अपनी माँ रनिया को अपना खानदानी पेशा छोडने का आवाहन करता है, तथा अपनी बहन ताहिरा की पढ़ाई बंद करने के कारण अपनी माँ पर गुस्सा उतारता है। वह जाति - पाति का विरोध करते हुए हिंदूधर्मीय भूरी से विवाह करता है। बुध्दू चुड़िहार होते हुए भी डाक्टर बनकर अपने डिस्पेंसरी में विभिन्न 'रूम - हिटर जैसी इलेक्ट्रीक उपकरणों का इस्तेमाल करता है, इन सभी घटनाओं से उसके चरित्र में से आधुनिकता के दर्शन होते हैं।

सत्तार पोस्टमास्टर भी आधुनिक विचारों का आदमी है। वह अपनी चालाखी से पोस्ट ऑफिस के बचतखातों के पैसे हड़प करता है। अखबार पढ़कर उसमें छपी घटनाओं पर प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। उसके विचार में ''आगे बढ़ना है, तो गाँव के पचडों से दूर होना ही होगा .....।'' [51] इस विचारों से उसके आधुनिकतावादी होने का परिचय प्राप्त होता हैं।

लता भी आधुनिक विचारोंवाली स्त्री है। सभी गाँववाले लता को रामवृक्ष पाण्डेजी की मृत्यु का कारण ठहराते है, लेकिन वह इसकी ओर ध्यान नहीं देती। लता बलापुर में अध्यापिका बनकर आती है, वह शिक्षित नारी है। लता ऊँच - नीच का भेदाभेद नहीं मानती और ब्राह्मण होते हुए भी बुध्दू के घर पानी पीना बुरी बात नहीं मानती देश की स्थिति सुधारने के लिए लोगों की मानसिकता बदलने की जरूरत को वह स्पष्ट करती है, यह सब उसके आधुनिक विचार हैं, उसे अपने पिताजी के विचारों से घृणा होती है।

पं. अशोककुमार पाण्डे भी शिक्षित युवक है, वे छीतूपुर के विद्यालय में अध्यापक हैं। वे अली अहमद की बेटी ताहिरा से प्यार करता है, तथा उसे पाने के लिए अपना धर्म त्यागने की भी तैयारी करते हैं। एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने पर भी वे शराब पीते है, मांस भक्षण करते है, उनके शिक्षित होने के कारण विचारों में बदलाव दिखाई देते हैं। बलापुर में अँग्रेजी स्कूल 'सरस्वती शिशु मंदिर' की स्थापना करते है। इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिकतावाद का प्रभाव उनके चरित्र पर पढ़ा हैं।

अजय क्रिश्चियन डिग्री कॉलेज का विद्यार्थी है, हर रोज शहर जाता - आता रहता है। शहर में जगह - जगह पुस्तकालय देखकर, पुस्तकें, अखबार, पत्रिकाएँ देखकर तथा इनको पढ़कर लोग आपस में विचार - विमर्श करते हैं, जिससे सोचने समझने का स्तर बढता है चेतना का विकास होता है यह सब सोचकर बलापुर में 'बलापुर ग्रामीण पुस्तकालय' खोलने का फैसला करता है। इन प्रसंगों से उसके आधुनिक विचार स्पष्ट होते हैं।

बवाली आधुनिक और क्रांतिकारी विचारों का युवक है। वह देश की स्थिति को लेकर काफी चिंतित है। देश की स्थिति सुधारने के लिए युवाओं को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने की जरूरत को वह हमेशा प्रस्तुत करता है। उसका कहना है - ''जब तक जमींदारन अउर पूंजीपतवन का नास नहीं होगा, खुसहाली नहीं आएगी।'' [52] वह देश के धनी लोग और नेता लोगों का हमेशा विरोध करता है, तथा इन्हें देश की दुरावस्था का जिम्मेदार मानता है। मजदूर और किसानों का संगठन बनाकर देश में क्रांति लाने की आवश्यकता पर जोर देता है। इन घटनाओं में उनके आधुनिक विचार दिखाई देते है। अशोक के दो युवा मित्र भी आधुनिक विचारों के हैं, उनका कहना है संस्कृत भाषा हमारी संस्कृति का आधार जरूर है, लेकिन पेट भरने के लिए सिर्फ संस्कृत काफी नहीं है, तो अँग्रेजी शिक्षा की भी आवश्यकता है। वे परंपरागत शिक्षा को छोडकर आधुनिक शिक्षा अपनाने की माँग करते हैं। इससे उनके विचारों में आधुनिकता के दर्शन होते है।

इसके अलावा पं. दयाशंकर पाण्डे, फादर अशोक फ्रांसिस, पतरस भाई, लल्लू आदि पात्र भी आधुनिक विचारों के हैं। लल्लू तो पागल होते हुए भी हमेशा अपने व्यवहार से आधुनिकना के दर्शन कराता है।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत उपन्यास 'मुखड़ा क्या देखे' में अली अहमद, लता, बिशुन भाट, बुध्दू, बवाली, सत्तार, अशोककुमार पाण्डे, अजय, अशोक के दो मित्र, दयाशंकर पाण्डे, पतरस, लल्लू आदि पात्रों में आधुनिकता के दर्शन होते है। वे परंपराओं के साथ संघर्ष करके नये आधुनिक विचारों का अनुकरण करना चाहते हैं। शिक्षा प्रसार के लिए स्कूल खोलना, ज्ञान वृध्दि के लिए पुस्तकालय खोलना, महिलाओं के लिए शिक्षा की आवश्यकता पर बल देना, शराब पीना, होटलों में जाकर ऊँचे - ऊँचे पदार्थों का उपभोग लेना ये सारी बातें उन युवकों के आधुनिक होने की गवाही देती हैं। लता अध्यापिका बनकर जातीय भेदाभेद को निरर्थक मानती है, अपने पिता की जमींदारी प्रवृत्ति की घृणा करती है। ये सारे पात्र आधुनिक विचारों के वाहक लगते हैं।

2.6 परिवेशानुकूल पात्र संरचना

आधुनिक उपन्यासों की स्थिति एवं गति में निरंतर बदलाव हो रहे हैं। आज के उपन्यासकार उपन्यास में सिर्फ कथावस्तु को हो महत्त्वपूर्ण नहीं मानते, तो बाह्य परिवेश को भी महत्त्व प्रदान करते हैं। परिवेश के प्रभाव में आए पात्र और उनकी बदलती जीवनशैली आज के उपन्यासकारों को हमेशा आकर्षित करती रही है। अब्दुल बिस्मिल्लाजीने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में परिवेश और उसके परिवर्तन से संबंधित पात्रों की रचना की है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने परिवेशानुकूल संरचना का निर्वाह कैसे किया है, इसे देखेंगे -

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में भारत की स्वाधीनता, चीन का आक्रमण, शास्त्रीजी के शासन काल में हिंदूस्तान - पाकिस्तान युध्द, नेहरूजी का शासनकाल, काँग्रेस विभाजन, अकाल, बांग्लादेश का उदय, आपातकाल, चुनाव, सांस्कृतिक परंपराएँ आदि मुख्य घटनाओं के चपेट में बदलते मानवी संबंध, आचार विचार व्यवहार का यथार्थ चित्रण खींचा है।

आजादी के बाद भी पं. रामवृक्ष पाण्डेजी की विचारप्रणाली बिल्कुल अलग सी लगती है। वे पाकिस्तान निर्मिती के कारण मुसलमानों की मनोप्रवृत्ति में बदलाव हुए है ऐसा मानते है। हिंदूस्तान की आजादी का नशा तो कई सालों तक भारतीय जंनता के मस्तिष्क से हटता ही नहीं था। गाँव - गँवई के गीतों में उसका असर दिखाई देता है, पंडितजी इस स्वाधीनता के परिवेश को देखकर खुश थे। पंडितजी खुद खद्दर पहनते थे और अपनी बेटी का रिश्ता भी उन्होंने खद्दर पहननेवालों के घर ही पक्का किया था।

अली अहमद अपने पर हुए अत्याचार की शिकायत के लिए पंडित नेहरूजी से मिलने इलाहाबाद जाता है क्योंकि उसे पूरी उम्मीद है की पंडित नेहरू पहले जैसे राजा नहीं है, वह जनता की देखभाल के लिए इस पद पर चुने गये हैं, और उस पर हुऐ अन्याय - अत्याचार को वे समझेंगे। उसका कथन है कि ''मगर हमारा देस तो अब आजाद हो गया है। जनता का राज है यहाँ।'' [53] आजादी के बाद अली की सोच में परिवेशानुकूल बदलाव आया है।

ईसाई लोगों ने दुल्लोपुर इलाके में अनेक अस्पताल, गिरजाघर, स्कूल बनवाए मुफ्त में खाना, कपडा, पैसा बाँटा इससे प्रभावित लोगों ने ईसाई धर्म स्वीकार किया प्रलोभनों से आकर्षित होकर धर्मांतर करना यह भी परिवेशानुकूल बदलाव की गवाही है। पतरस ईसाई धर्म स्वीकार करता है, तथा अन्य लोग भी इस धर्म को स्वीकार कर लेंगे ऐसी उसकी धारणा है, जिससे ईसाई धर्म के परिवेशजन्य प्रचार - प्रसार के कारण भारतीय जनमानस के व्यवहार तथा सोच में बदलाव आया है।

पाकिस्तानं की निर्मिती के बाद हजारों सिंधी और बलूची हिंदूस्तान आए। बलूचियों ने लूटपाट करके पैसे कमाएँ और निकल गए मगर आज भी बलूचियों के नाम से लोगों में दहशत हैं, बच्चे डरते हैं। सिंधी लोगों ने तो यहाँ जागीरदारी ही स्थापित की है, पूरा बाजार उनके कब्जे में रहा। उनकी यह स्थिति तत्कालीन परिस्थिती एवं परिवेश की उपज है।

प्रधानमंत्री लालबहादूर शास्त्रीजी के कार्यकाल में हिंदूस्तान - पाकिस्तान जंग शुरू होती है। उस जंग में हिंदूस्तान - पाकिस्तान पर जीत दर्ज करता है,

इससे पूरे हिंदूस्तान में खुशी की लहर दौडती है। रनिया भी अपने पती को " अपना देस जीत गया जंग में।" [54] कहकर आनंद व्यक्त करती है। यह कथन परिवेश में हुए बदलाव के कारण भारतीय लोगों की बदलती मानसिकता को उजागर करता है।

हिंदू मुसलमान के बीच जबलपुर में दंगा होता है, वहाँ पर पंडित नेहरूजी आकर दोनों धर्मियों को शांत रहने का आवाहन करते है और फसाद बंद हो जाता है। इस घटना से लोगों नें पंडित नेहरूजी के विषय में उत्सुकता बढती है, और लोग इन्हें देखने के लिए डिंडौरी की सभा में उपस्थित होते हैं। बुध्दू भी अली अहमद से कहकर डिंडौरी पहुँचता है। यहाँ परिवेश में हुए हलचलों से लोगों की बदलती मानसिकता बुध्दू द्वारा व्यक्त होती है। बाकी के लोग भी इसी अवस्था से गुजरते हैं।

बांग्लादेश की निर्मिती के समय बंगाली बाबू हिंदूस्तान आकर बसते हैं, और यहाँ की संस्कृति, लोगों का प्रेम देखकर हमेशा के लिए हिंदूस्तानी हो जाते है। बंगालीबाबू के व्यवहार से हिंदूस्तान के बारे में जो प्रेम व्यक्त होता है, उससे यह स्पष्ट होता है, कि परिवेश की परिवर्तनशीलता पात्रों की रचना में बदलाव करती हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में अकाल का चित्रण भी परिवेश की उपज है। अकाल के कारण पूरी जनता विवश हो गयी हैं। लोग कामधंदा ढूँढने के लिए इधर - उधर भटकने लगे, गाँव छोडने लगे लेखक अकाल का वर्णन करते हुए लिखते है, "किसानों के हल खेतों में उल्टे पडे रहे। ..... नाले में जहाँ - तहाँ जमा पानी भी सूख गया। जंगल की हरियाली गायब हो गई। ढोर - डोंगर पटापट मरने लगे। न खाने को चारा, न पीने को पानी।" [55] इस तरह अकाल की भयंकारिता ने दुल्लोपुर के लोगों को काम के लिए गाँव छोडना पडा यहाँ परिवेश के बदलाव के कारण पात्रों की संरचना में भी परिवर्तन हुआ है।

चुनाव की गहमागहमी हिंदूस्तान के गाँवो, कस्बों तक पहुँची जिससे छोटे - छोटे बच्चे भी झंडे, बिल्ले, लेकर अपने - अपने दल का प्रचार करने में जूट जाते हैं। इन बच्चों की ये हरकतें परिवेश के बदलाव की निशानी हैं।

निष्कर्षः-

उपन्यासकार ने स्वतंत्र भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवादी चेतना के उभार, धर्म - निरपेक्ष शक्तियों के बिखराव, पारंपारिक पेशों के टूटन, गावों का शहरों में उभार आदि घटनाओं एवं प्रसंगो में पात्रों की बदलती जीवनशैली एवं संरचना उजागर होती है, जिससे हर पात्र परिवेशानुकूल संरचना में गढ़ा हुआ दिखाई देता हैं।

समन्वित निष्कर्ष

प्रस्तुत उपन्यास 'मुखड़ा क्या देखे' में गाँव के मुखड़े के बदलाव के साथ - साथ पात्रों के मुखड़े में होनेवाले बदलावों को दर्शाता हैं। इसमें हिंदू मुसलमान, पासी, ब्राह्मण, चमार, गोंड, आदि विविध जाति धर्न के लोग हैं। मुसलमान पात्रों में धर्म के प्रति कट्टरता तो अन्य पात्रों में लाभ के लिए धर्म को ताक पर चढ़ाने की प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। पतरस इसका उदाहरण हैं, जो वैयक्तिक स्वार्थ के लिए 'गोंड' से ईसाई बनता हैं। इस उपन्यास के कई पात्र जातीय भेदाभेद को मानते हैं। रामवृक्ष पाण्डे, सृष्टिनारायण पाण्डे, अशोककुमार इसके उदाहरण हैं। तो कई पात्र प्रेम के खातीर जातीय भेदाभेद के बंधनों को तोडते हैं। बुध्दू - भूरी का प्रेम इसी कोटी में आता हैं। ये सारे पात्र परिवेश की उपज हैं। पुरानी पीढ़ी के पात्र अपनी परंपराओं का त्याग करना नहीं चाहते तो आधुनिक पात्र आधुनिकता की हवा के साथ आनेवाले नये - नये बदलाव को स्वीकार करते हैं। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करके प्रेमविवाह को प्रोत्साहन देते हैं। जातीय भेदाभेद को दूर करने का प्रयत्न करते हैं। लता पं. रामवृक्ष पाण्डे नाम के ब्राह्मण की बेटी होकर भी वह चुड़िहार के घर का पानी पीना बुरा नहीं मानती है।

उपन्यास के नारी पात्र कुटुंब वत्सल, पतिपरायण एवं सेवाभावी प्रवृत्ति के हैं। कुछ पुरूष पात्र अनीति में रस लेते हैं। नये युवक स्कूल खोलकर, ग्रंथालय खोलकर, अँग्रेजी शिक्षा लेकर नये समाज का निर्माण करना चाहते हैं। स्पष्ट है कि लेखक ने परिवेशानुकूल पात्रों की संरचना करके पात्रों के चरित्र - चित्रण में गतिशिलता को दिखाई पात्रों की भीड़ में मुख्य पात्र बीच - बीच में खो जाते है, उन्हें ढूँढना पडता हैं। पात्र चरित्र - चित्रण में लेखक ने युगबोध, कालबोध, आधुनिक बोध आदि को दर्शाया गया हैं।

संक्षिप्त में -

1) प्रस्तुत उपन्यास में नायक अली अहमद है, जो मुसलमान चुड़िहार है, प्रतिनायक के रूप में रामवृक्ष पाण्डे, सृष्टिनारायण पाण्डे का चित्रण हुआ है।
2) नारी पात्रों में रनिया महत्त्वपूर्ण पात्र है। सत्तार की अम्माँ, भूरी और लता नारियों के बदलते स्वरूप का उचित उदाहरण पेश करती हैं।
3) उच्चवर्गिय हिंदू - मुस्लिम समाज के पिछडे तथा निम्नवर्गीय जातियों का मिलकर शोषण करते हैं इसका यथार्थ चित्रण व्यक्त हुआ है।
4) इस उपन्यास में लेखक ने पात्रों की बहुलता होते हुए भी हर एक पात्र को अपने अस्तित्त्व के उभार में पूरा समय दिया है। पात्रों की बहुलता उपन्यास की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।
5) उपन्यास में वर्णित पात्र भारतीय जनमानस का प्रतिनिधित्त्व करने में सक्षम है।
6) उपन्यास के पात्रों के चरित्र - चित्रण में परंपरागत भाव तथा आधुनिकता दोनों का उचित संमिश्र हुआ है।
7) उपन्यास के गौण पात्र कथावस्तु को गति देने में एवं मुख्य कथा को प्रभावित करने में सक्षम हैं।

8) उपन्यास में लेखक ने परिवेशानुकूल पात्रों की संरचना करके परिवेश के बदलते स्वरूप के अनुसार पात्रों में भी बदलाव की स्थितियों का निर्माण किया है।

9) विवेच्य पात्र गांधीवादी, मार्क्सवादी, साम्यवादी, आधुनिकतावादी विचारधारा को प्रस्तुत करते हैं।

10) विवेच्य पात्र स्थितिशीलता में गतिशीलता का निर्माण करते है।

11) धार्मिकता, जातीयता, की दीवारों को तोडने का काम आधुनिक बोध के पक्षधर पात्र करते हैं।

12) मुस्लिम, हिंदू, ईसाई पात्र कभी - कभी धर्मकट्टर तो कभी - कभी धर्मपरिवर्तन के पक्षधर दिखाये हैं।

13) आधुनिक युवक - युवति पात्र प्रेम को अधिक महत्त्व देकर धर्म तथा जातीयता के भेदभाव को प्रेम के सामने महत्त्व नहीं देते है।

14) प्रस्तुत उपन्यास के पात्र स्थितिशील, गतिशील, विकासोन्मुख लगते है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग, डॉ. त्रिभुवन सिंह पृष्ठ - 361
2. हिन्दी साहित्य कोश, भाग - 1 संपादक - धीरेन्द्र वर्मा पृष्ठ - 45
3. उपन्यास स्थिति और गति, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर पृष्ठ - 12-13
4. मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 31
5. वही, पृष्ठ - 36
6. वही, पृष्ठ - 39
7. वही, पृष्ठ - 104
8. वही, पृष्ठ - 62
9. वही, पृष्ठ - 170
10. वही, पृष्ठ - 11
11. वही, पृष्ठ - 29
12. वही, पृष्ठ - 27
13. वही, पृष्ठ - 18
14. वही, पृष्ठ - 105
15. वही, पृष्ठ - 173
16. वही, पृष्ठ - 207
17. वही, पृष्ठ - 42
18. वही, पृष्ठ - 72
19. वही, पृष्ठ - 87
20. वही, पृष्ठ - 155
21. वही, पृष्ठ - 224
22. वही, पृष्ठ - 121 - 122
23. वही, पृष्ठ - 204
24. वही, पृष्ठ - 62
25. वही, पृष्ठ - 93
26. वही, पृष्ठ - 126
27. वही, पृष्ठ - 222
28. वही, पृष्ठ - 224
29. वही, पृष्ठ - 22
30. वही, पृष्ठ - 23
31. वही, पृष्ठ - 200
32. वही, पृष्ठ - 200
33. वही, पृष्ठ - 235
34. वही, पृष्ठ - 200

35. मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 152
36. वही, पृष्ठ - 184
37. वही, पृष्ठ - 35
38. वही, पृष्ठ - 136
39. वही, पृष्ठ - 173
40. वही, पृष्ठ - 176
41. वही, पृष्ठ - 183
42. वही, पृष्ठ - 203
43. वही, पृष्ठ - 144
44. वही, पृष्ठ - 144
45. वही, पृष्ठ - 181
46. वही, पृष्ठ - 199
47. वही, पृष्ठ - 189
48. वही, पृष्ठ - 192
49. बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन
डॉ. क्षितिज धुमाळ पृष्ठ - 298
50. मुखड़ा क्या देखे पृष्ठ - 123
51. वही, पृष्ठ - 189
52. वही, पृष्ठ - 183
53. वही, पृष्ठ - 40
54. वही, पृष्ठ - 126
55. वही, पृष्ठ – 74